International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-04-2020; Accepted: 06-05-2020; Published: 13-05-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 12-14

कोरोना वायरस के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्र संबोधन की सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया

Sanjay Kumar

Assistant Professor, Department of Political Science, Zakir Husain Delhi College Evening, University of Delhi, Delhi, India

सारांश

कोरोना बीमारी से लड़ने के लिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के द्वारा तीसरा राष्ट्र के नाम संबोधन 2 अप्रैल 2020 को किया गया। सबसे प्रथम संबोधन में जनता कर्फ्यू का आहवान किया गया तथा डॉक्टरों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक थाली और ताली कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसको देश की सारी जनता ने डॉक्टरों और इमरजेंसी सेवाओं में कार्य करने वाले कर्मचारियों के प्रति सम्मान पूर्वक 5:00 बजे थाली बजाकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित की । दूसरे संबोधन में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के द्वारा लॉक डाउन का आवाहन किया गया, किसका देश भर की जनता पूरे अच्छी प्रकार से पालन कर रही है। राष्ट्र के नाम तीसरे संबोधन पर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के द्वारा एक और कार्यक्रम का आयोजन 2 अप्रैल को घोषित किया गया कि 5 अप्रैल को सभी देशवासी 9:00 बजे 9 मिनट तक मोमबत्ती,दीये जलाकर देश की एकता का प्रदर्शन करेगे। इस कार्यक्रम से देश भर में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की प्रतिक्रिया सोशल मीडिया में मिल रही है बहुत से नागरिकों को यह उम्मीद थी कि इस राष्ट्र के नाम संबोधन में श्री नरेंद्र मोदी के द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं पर किए जा रहे सरकार के प्रयासों के संदर्भ में देश को अवगत कराएगे लेकिन जब इस प्रकार की जानकारी राष्ट्र संबोधन में नहीं मिल पाई तो सोशल मीडिया में नकारात्मक प्रतिक्रिया भी सरकार के खिलाफ हुई इस आर्टिकल में उन्हीं कुछ प्रतिक्रियाओं को शामिल करके सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है ।

मूल शब्द: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, कोरोनावायरस, राष्ट्र के नाम संबोधन, 2 अप्रैल

प्रस्तावना

2 अप्रैल को जिस प्रकार से घोषित किया गया था कि प्रधानमंत्री 3 अप्रैल को राष्ट्र के नाम सुबह 9 बजे संबोधन करेंगे तो सबको एक उम्मीद थी कि प्रधानमंत्री देशभर में हॉस्पिटल में काम करने वाले लोगों के लिए जरूरी रक्षा उपकरण तथा सम्मान की जो कमियां हो रही है उसे पूरा करने के संदर्भ में जनता के समक्ष अपनी तैयारियों का ब्यौरा देंगे तथा राहत पैकेज पर बात करेंगे लेकिन पूरे संबोधन में राहत पैकेज तथा अन्य तैयारियों के संदर्भ में किसी प्रकार की कोई चर्चा नहीं होने के कारण बहुत सारे कमेंट,व्यंग्यात्मक टिप्पणियां, प्रतिक्रिया और आलोचनात्मक तरीके से व्यक्त किए गए हैं और बहुत सारे कमेंट मोदी जी के वक्तव्य का स्वागत करते हुए उनको सकारात्मक तरीके से लेने का प्रयास भी किया गया है दोनों को एक सूची मे दिया जा रहा है और खुद ही आप पढ़ कर फैसला कर सकते हैं कि मोदी जी के राष्ट्र संबोधन को हम किस प्रकार ले । यह सब प्रतिक्रियाएं फेसबुक और ट्विटर के माध्यम से पीएम के संबोधन के बाद शिक्षक, रिसर्च स्कॉलर तथा जागरूक नागरिकों के द्वारा दी गई है।

-- पहले थाली अब दीया मोमबत्ती। हंसिये मत, हल्के में भी मत लीजिये। महामारी का इस्तेमाल कर भेड़ मानसिकता निर्माण की जा रही है। संकट के समय लोग तार्किक सोच की क्षमता खो बैठते है, खास कर वह समाज जिसमे तार्किक सोच मूलतः ही कम हो। ऐसा समाज संकट के समय एक गॉड फादर को तलाशता है जो संकट से उबार सके और उसके कहने पर कुछ भी कर गुजरता है।एक के बाद एक प्रयोग कर जनता को भेड़ो में बदला जा रहा है। कल इन्ही भेड़ो को भेड़ियों में बदल उन लोगो पर छोड़ा जाएगा जो आज भेड़ बनने से इन्कार कर रहे है। डॉ भूपेन्द्र चौधरी टीचर दिल्ली यूनिवर्सिटी ने फेसबुक पर, 1

--कोरोना दिलचस्प है, भारत में आते ही उसके कान और आंख निकल आए। अब घंटी सुनाओ, दिया दिखाओ और चिकित्सा के अनोखे प्रयोग करो! डॉ राधिका मेनन ने फेसबुक पर लिखा, 2

--दीपक जलाने से न मजदूरों का पलायन रुकेगा, न अस्पतालों में कोई सुविधा बढ़ेगी, न डॉक्टरों पर होने वाली पत्थरबाजी रुकेगी, उल्टे lockdown को लोग सीरियस नही लेंगे। यह दीपकबाजी कही से भी तर्कसंगत नही लग रहा है। प्रधानमंत्री का यह घोषणा टोटका करने वाला तांत्रिक और अंधविश्वास फैलाने वाला धर्मगुरु जैसा है। कोरोना को हराने के लिए हमे लॉकडाउन को पूर्णतः सफल बनाना पड़ेगा, अस्पतालों में स्वास्थ्य सुविधाएं जैसे PPE, मास्क, वेंटिलेटर आदि के अलावा रिसर्च करके दवा या वैक्सीन खोजने और स्वास्थ्यकर्मियों को पूर्णतः सुरक्षा प्रदान करना पड़ेगा। राकेश रंजन फेसबुक पर, 3

--हम भारतीय लोग या तो अंधभक्ति करेंगे या अंधविरोध। मध्यमार्ग या संतुलित सोच को वानप्रस्थ करवा चुके शायद हम। डॉ अजय नावरिया शिक्षक जामिया विश्विद्यालय द्वारा फेसबुक पर, 4

--वो कहेंगे थाली बजाओ तुम मास्क पर अड़े रहना ! वो कहेंगे दीया जलाओ तुम टेस्ट बढ़ाने की आवाज बुलन्द करना ! वो कहेंगे मोमबत्ती जलाओ तुम हॉस्पिटल पर सवाल करते रहना !वो कहेंगे फ़्लैश जलाओं तुम डॉक्टर्स के लिए PPE की मांग से नहीं डिगना। संदीप कुमार फेसबुक पर, 5

--मोदी जी दिवाली नही महामारी है,आप बस मास्क ओर सेनिटाइजर पहुचाओ, टेस्ट बढ़ाओ, हॉस्पिटल बनाओ,यही आज राजधर्म है इसे निभाओ। रवि शंकर ने फेसबुक पर 6

--हम तभी कोरोना से लड़ पाएंगे और सुरक्षित रहेंगे जब हमारे देश के मेडिकल स्टॉफ सुरक्षित रहेंगे। जिगेश मेवणी, विधायक गुजरात विधानसभा ट्वीट 7

--आज कोरोना संकट की इस घड़ी में देश प्रधानमंत्री की हर मुहिम का साथ दे रहा है, मगर प्रधानमंत्री जी ने आँखों पर न जाने कौनसी पट्टी बांध रखी है। न देशवासियों की परेशानी नजर आ रही है और न ही राज्य सरकारों का हक। आखिर संसाधनों के अभाव में ये जंग कैसे जीती जाएगी? कांग्रेस पार्टी का बयान फेसबुक पर जारी । 8

--सारा विश्व कोरोना खत्म करने की दवाई खोज रहा है वहां मोदी जी ने रात 9 बजे अंधेरा कर दीये जलाने लिए बोला है आपकी क्या राय है? तरुण कुमार, एआईसीसी सेक्रेटरी फेसबुक पर, 9

--मोदी जी न जाने कितने लोग ऐसे हैं जिनके घर में खाना पकाने को सामग्री तक नहीं,अगर दीपकों का यही तेल उनके लिए काम आता तो बेहतर था, रोशन करना

ही हैं गरीबों का चूल्हा करो। यह उत्साह गरीबों की मदद के बाद दिखाए तो ज्यादा अच्छा होगा। एनएसयूआई प्रेजिडेंट नीरज कुंदन 10

---कोई प्लानिंग नहीं,गरीबों के कोई पैकेज नहीं, बॉडी मास्क की कमी पर कोई बात नहीं, डॉक्टरों के लिए कोई पैकेज नहीं,वेंटिलेटर की कोई बात नहीं,हर समस्या का समाधान केवल नया ईवेंट है इनके लिये, ईवेंट मैनेजमेंट सरकार है ये। दिनेश मोहनिया विधायक आम आदमी पार्टी ,ट्विटर पर 11

बहुत सारी व्यंग्यात्मक टिप्पणियां सोशल मीडिया में दीया जलाने के कार्यक्रम को लेकर की गई है। जिनके राजनीतिक संदेश बहुत स्पष्ट है कि यह सब टिप्पणियां मोदी सरकार के इस 5 अप्रैल कार्यक्रम से अपनी नाराजगी व्यक्त करने का एक माध्यम है।

--साहेब से कोई पूँछ लो देशी घी का दिया जलाना है या पतंजलि का? सुनील मिश्र, 12

--अंधेरी रात में दिया तेरे हाथ में,डॉ प्रभात रंजन शिक्षक दिल्ली यूनिवर्सिटी एवम प्रसिद्ध लेखक द्वारा फेसबुक पर, 13

--छुप गए सारे नजारे ओए क्या बात हो गई। तूने काजल लगाया दिन में रात हो गई। डॉ सुनीता पारीक दिल्ली यूनिवर्सिटी शिक्षक ने फेसबुक पर कहा, 14

--नौटंकी नेशन, प्रदीप मैगज़ीन ने ट्वीट मे कहा,15

-- 'सारी लाइटें बंद होने पर कोरोना को लगेगा कि भारत में अब कोई नहीं है वह भाग जायेगा, डॉ देवेश फेसबुक पर, 16

-- महाराज का सख्त आदेश : पहले थाली पीटकर कोरोना के कान फोड़े,अब टार्च जलाकर उसकी आँखें फोडनी हैं ! डॉ बालेन्द्र कुमार फेसबुक पर,17

--साइंस और समाधान पर पाखंड और अंधविश्वास हावी होता जा रहा है विपक्ष मौन क्यों ? अब क्या है खोने के लिए ? डॉ रतनलाल हिंदू कॉलेज शिक्षक फेसबुक पर। 18

--मान गये मोदी जी! आपका जवाब नहीं!! प्रोफेसर गोपेशर सिंह हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने फेसबुक पर, 19

-- सारे मोदी समर्थकों ने तथा गोदी मीडिया ने सोशल मीडिया में इसको सकारात्मक कार्यक्रम घोषित किया तथा देश की एकता का संदेश देने का इससे अच्छा तरीका औऱ कार्यक्रम नहीं हो सकता है, मोदी समर्थकों की भावना को दो संदेशों से ही समझ सकते हैं एक आम मोदी समर्थक सुनील सत्यम और एक देश केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल जी 20

---दुनिया जब भविष्य में मोदी जी का आकलन करेगी तो लिखेगी " कोरोना काल में नरेंद्र दामोदरदास मोदी ऐसे अकेले विश्व नेता थे जिसने कोरोना के ख़िलाफ़ न केवल चिकित्सा स्तर पर युद्ध किया वरन अपने देशवसियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए मानसिक युद्ध भी लड़ा" 5 अप्रैल 2020 को सभी 9 मिनट तक घर की बालकनी में दीपक/चिराग़ जलाएँ. देश को अहसास कराएँ कि इस युद्ध में कोई अकेला नही है. सूनील सत्यम द्वारा फेसबुक पर लिखा गया। 21

--इस रविवार 5 अप्रैल को हमें मिलकर कोरोना के संकट के अंधकार को चुनौती देनी है, उसे प्रकाश की ताकत का परिचय कराना है। 5 अप्रैल, रविवार को रात 9 बजे मैं आप सबके 9 मिनट चाहता हूं: पीयूष गोयल मंत्री ट्वीट डॉ मंजेश कुमार दिल्ली विद्यालय के शिक्षक ने फेसबुक पर प्रतिक्रिया दी कि प्रतीकवाद (symbolism) की एक सीमा होती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उसका महत्व हो सकता है लेकिन कोरोना संकट की भीषण परिस्थिति से निपटने के लिए मोदी जैसे प्रधानमंत्री से कुछ बडी और ठोस घोषणाओं की अपेक्षा थी। 22 मंजेश कुमार जैसे देश में करोड़ों लोगों को जो उम्मीद थी आज के भाषण से थोड़ी से निराशा भी हुई और आज का संबोधन में एक गहराई कम और मात्र एक कार्यक्रम को जनता के समक्ष प्रस्तुत करना रहा, और दूसरी तरफ इस समय अमेरिका और दुनिया के दूसरे देशों के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों के संबोधन और वक्तव्य पर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि उनका सारा वक्तव्य और संबोधन करोना से लड़ने के लिए देश में की गई तैयारियों और उससे संबंधित राहत उपलब्ध कराने के संदर्भ पर व्यक्त किया जा रहा है। इस संकटकाल में दुनिया भर की सरकारें अपने देश की विपक्ष की पार्टियों के साथ तालमेल बनाकर काम कर रही है।

अमेरिका के राष्ट्रपति के व्हाइट हाउस के फेसबुक पेज को आप देखेंगे (23) तो आप पाएंगे कि हर रोज राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और उसके कैबिनेट के सदस्यों के द्वारा अपनी तैयारियों के संदर्भ में पूरे दस्तावेज जनता के सामने रखे जा रहे हैं।

और अब आप भारत के संदर्भ में बात करें तो हम पाएंगे कि भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अभी तक तीसरा संबोधन किया है पहले दो संबोधन में उनके द्वारा एक कड़ा फैसला लिया गया था पूरे देश के लॉक डाउन करने का जिसका स्वागत विपक्ष तथा देश के सभी नागरिकों के द्वारा किया गया था लेकिन उसके बाद जिस प्रकार की परिस्थितियां देश भर में गरीब मजदूरों के पलायन को लेकर हुई उसको देखकर लगा कि इस प्रकार के बड़े फैसले से पहले लगता है कि किसी प्रकार की कोई तैयारी और कोई योजना बंद कार्यक्रम नहीं बनाया गया था कि पूरे भारतवर्ष लॉक डाउन का क्या प्रभाव,किन नागरिकों पर,किस तरह से पड़ेगा, और मोदी जी ने जनता कर्फ्यू में हॉस्पिटल में काम करने वाले स्टाफ को धन्यवाद देने के लिए देशभर में 5:00 बजे एक ताली औऱ थाली बजाने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया था ताकि हम सभी हॉस्पिटल में काम करने वालों का आभार व्यक्त कर सकें, पूरे देश ने उसमें भागीदारी करके अपना पूरा धन्यवाद हॉस्पिटल, पुलिस, सफाई कर्मियों, किसानों और इस समय जरूरी सेवायें में काम करने वाले प्रत्येक कर्मचारी को दिल से आभार व्यक्त किया। लेकिन जनता 5 अप्रैल के कार्यक्रम से थोड़ा सा नाखुश सोशल मीडिया और अन्य माध्यम में कहीं न कहीं दिखाई दे रही है लोगों तैयारियों को जानने को लेकर ज्यादा उत्सुक है जनता उम्मीद करती है कि प्रधानमंत्री के चौथे राष्ट्र संबोधन में देश के समक्ष उस प्रकार की तैयारी और चुनौतियों को खुल कर रखेंगे। जिससे जनता समझ सके कि करोना बीमारी से आने वाले समय में हम किस प्रकार से लड़ रहे हैं उनके प्रभाव देश पर क्या पड़ने वाले हैं।

डॉ संजय कुमार जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज इवनिंग दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिक विभाग में कार्यरत है यह उनके निजी विचार है,

संदर्भ सूची

नोट -इस लेख में दिए गये वक्तव्य को मेरे फेसबुक ओर ट्विटर फ्रेंड लिस्ट में से लिए गए हैं नोट--ये सारे कमेंट, विचार और प्रतिक्रिया 2 अप्रैल 2020 में फेसबुक और ट्वीटर से लिये गये है।

संदर्भ सूची

1. ये सारे कमेंट 2 अप्रैल 2020 में फेसबुक और ट्वीटर से लिये गये है
2. डॉ भूपेंद्र चौधरी के फेसबुक से, 02-04-2020 2-राधिका मैनन की फेसबुक से
3. राकेश रंजन के फेसबुक से
4. प्रोफेसर अजय नवारिया के फेसबुक
5. संदीप कुमार फेसबुक से
6. रवि कुमार फेसबुक से
7. जिग्नेश मेवानी के ट्वीट से
8. कांग्रेस का वक्तव्य फेसबुक पर
9. तरुण कुमार एआईसीसी सेक्रेटरी के फेसबुक से।
10. नीरज कुंदन प्रेसिडेंट कांग्रेस स्टूडेंट्स विंग के इंस्टाग्राम अकाउंट से
11. दिनेश मोहनिया के ट्वीट से
12. सुनील मिश्र के फेसबुक से
13. डॉ प्रभात रंजन के फेसबुक से
14. डॉ सुनीता पारीक दिल्ली यूनिवर्सिटी फेसबुक से
15. प्रदीप मैगजीन जाने-माने क्रिकेट खेल पत्रकार के ट्वीट से
16. डॉ देवेश फेसबुक से
17. डॉ बालेन्द्रकुमार की फेसबुक से
18. डॉ रतन लाल हिन्दू कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय की फेसबुक से,
19. प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह की फेसबुक से
20. पीयूष गोयल केंद्रीय मंत्री के ट्विट से

21. सुनील सत्यम के फेसबुक से
22. डॉ मंजेश कुमार शिक्षक दिल्ली विश्वविद्यालय के फेसबुक से,
23. अमेरिका के वाइट हाउस फेसबुक पेज से जानकारी,